अंतरा-शब्दशक्ति

चौंक क्यों गए?

लघु कथा संग्रह

पूनम झा

चौंक क्यों गए?

(लघुकथा संग्रह)

पूनम झा

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-35-3

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
कार्यालयनेहरु चौक वारासिवनी १५ :,जिला बालाघाट ४८१३३१ (प्र.म)
शाखा२०७-एस :, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर ४५२००१ (.प्र.म)
दूरभाष९४२४७६५२५९ मो २५३१५९-०७६३३ (कार्या) :
अण्डाक -antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © पूनम झा
मूल्य: ४०.०० रुपये
आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'chaunk kyon gae' by 'poonam jha'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

मेरी कलम से कुछ शब्द आपके लिए

अपने जीवन में कई बार हम देखते हैं कि गलत बातों का भी हम समर्थन देते रहते हैं क्योंकि उसका अंजाम हमें मालूम नहीं होता है । उसे ही प्रकाश में लाने का एक प्रयास मैं अपनी लघुकथा के माध्यम से कर रही हूँ । मैं अपने अनुभव और आसपास की घटनाओं से जब भी प्रेरित या आहत होती हूँ तो उसे कलमबद्ध करने की कोशिश करती हूँ ।

मेरी पुस्तक **"चौंक क्यों गए"** में जो भी लघुकथाएं हैं, मुझे विश्वास है कि आपको अपना सा लगेगा । सभी लघुकथा हमारे-आपके जीवन से जुड़ी है । इसमें कुछ समाज की विडंबनाओं को दर्शाती है तो कुछ हमारे भोलेपन का नाजायज फायदा उठाने के अंजाम को । आप मेरी सभी लघुकथा को पढ़ने के बाद चौंक जाएंगे कि "ये तो आपकी आप बीती है" या "आपके अपनों की है" , ऐसा मुझे विश्वास है ।

मेरा उद्देश्य 'समाज-परिवार के प्रति हमारा समर्पण के साथ-साथ सजगता भी जरूरी है', ये अवगत कराना है । साथ ही साथ मेरी लघुकथा से यदि एक-दो व्यक्ति भी लाभान्वित होता है तो मेरा लिखना सार्थक होगा । मुझे आशा है कि मेरी लघुकथाएं आपके दिल को अवश्य स्पर्श करेगी ।
आप अपनी प्रतिक्रियाएँ दें ।

धन्यवाद ।

--पूनम झा
कोटा राजस्थान

अनुक्रमणिका

1. बचत	5
2. अदृश्य फफोले	6
3. रिश्ते	7
4. ईर्ष्या	8
5. हुनर	9
6. रेगिस्तान	10
7. गंदी बात	11
8. मनमीत	12
9. आवाज	13
10.कथा का प्रभाव	14
11.मजाक	15
12.बदल गए तुम	16

बचत

सुरेश ने बेटी के बारे सोचते-सोचते विनय का डोर बेल बजा दिया ।
"अरे सुरेश तुम ? सुबह-सुबह ? कैसे ? सब खैरियत तो है ?" दरवाजा खोलते ही विनय ने कई सवाल पूछ बैठा ।

"यार विनय ! मुझे कुछ रुपये चाहिए । बेटी बीमार है । उसे डाक्टर के पास ले जाना पड़ेगा ।"

"ओह !"

"मेरे पास बिल्कुल पैसे नहीं हैं । खाता पूरा खाली है ।"

"कितना चाहिए ? वैसे ऐसे कैसे पूरा खाली कर दिया खाता ?"

"तुम तो जानते हो कि मैं हमेशा घर भैया-भाभी को पैसे भेजता हूँ । कल ही सारे पैसे घर भेज दिया । मुझे लगा अब 28 तारीख हो गयी है । दो दिन बाद सेलरी आ ही जाएगी । पर मुझे क्या मालूम था कि इस तरह अचानक जरूरत आ जाएगी । रात से ही बेटी को बुखार है । पांच हजार रुपए चाहिए । क्या पता टेस्ट वगैरह में कितना खर्च होगा ?"

"ठीक है, मैं देखता हूँ ।"

विनय रुपये लाकर सुरेश को देते हुए--"वैसे दस साल हो गए नौकरी करते हुए । तुम भविष्य के लिए कुछ जमा भी करते हो या नहीं ?"

"नहीं । पैसे बचते कहां हैं ? हर काम लोन लेकर करना पड़ता है ।"
"कितना भी कम मिलता हो, पर भविष्य के लिए तो बचाना जरूरी है । जरूरत तो कभी भी आ जाती है ।"-- विनय कहता जा रहा था--"देखो सुरेश ! मेरी बातों का बुरा मत मानना, लेकिन जब तुम्हारे पास पैसे नहीं थे तो कल खाता से सारे पैसे घर क्यों भेज दिया ? पास में कुछ तो रखना चाहिए । क्या इसके लिए भाभी जी कुछ नहीं कहती हैं तुमको ?"

"कहती हैं कि इस तरह खाली हाथ रहना ठीक नहीं जब आपको जरूरत होगी तो कहाँ से लाएंगे, पर मै ही अनसुनी कर देता हूँ और भैया-भाभी को कहूँ तो वे लोग इसे बहाना समझते हैं ।"

विनय --"पर अभी क्या वे काम आ रहे हैं ? फिर तुम क्यों .....? हाँ सुरेश, हाथ खाली रखना ठीक नहीं रहता है |"

"सच, तुम सही कह रहे हो । आज मुझे ये अहसास हो रहा है।"
सुरेश अपना मोबाइल निकाल कर एक एजेंट को फोन किया "देवेंद्र जी आप मुझे जो बचत के कुछ प्लान के बारे बता रहे थे । विस्तार से मुझे उसकी जानकारी चाहिए । इसलिए आप कल आ जाईएगा ।"

अदृश्य फफोले

जब भी रूबी आलमीरा खोलती उस नन्हीं सी जान की तस्वीर देख ही लेती थी । आज भी उसकी तस्वीर निहार रही थी और यादों में खोई थी --"दूसरी संतान भी बेटी देखकर सबने ऐसे मुँह बनए थे जैसे सब दिल से बेटे की दुआ माँग रहे हो । अरे जेठानी कब अपनी होती है ?"--रूबी उस तस्वीर से जैसे बातें कर रही हो --"पर गुड़िया मैंने तुझे अपने कलेजे से कब दूर किया ? मेरे बारे तो सोचती, साढ़े तीन महीने में ही उकता गई ? मुझे छोड़ जाने में कुछ भी सोचा नहीं ? देख दुनियां की तरह ये आंसू भी निष्ठुर हो गए । अब ये भी नहीं टपकते । इतने साल हो गए मगर एक-एक पल हमें याद है । वो खिलखिलना, वो रोना और वो तेरा .....।"

सोचते-सोचते रूबी वहीं बैठ गई --"सबने दु:ख प्रकट किया था । पर दूसरी वाली जेठानी ने -- 'दहेज के लाखों रुपए भी तो बच गए ।" --ये शब्द दिल पर ऐसे लगे जैसे किसी ने दिल पर तेजाब फेंक दिया हो ।"--तस्वीर पर टपके आंसू को पोंछकर चूमते हुए --"उन्नीस साल हो गए पर आज भी वो दिल पर बने फफोले सूखे नहीं हैं ।"

रिश्ते

"नमिता मेरी पैन्ट और शर्ट तूमने बैग से निकाला भी नहीं वैसे ही गन्दे पड़े हैं। " अमन खीजते हूए कह रहा था,

"दूसरे तो निकाल दो । सारे काम कर लेती हो बस मेरा काम ही छोड़ देती हो । मैं पति हूं इसलिए जैसे तैसे निभा रही हो। रिश्ता तो केवल मायके का ही समझती हो।"

अमन कहता ही जा रहा था।

"रिश्ता कितना प्यारा शब्द हैं न ? " नमिता मन ही मन सोचते हुए।" परसों ही तो हूए हैं मायके से आये हूए। "....

"पांच भाईयों की अकेली और सबसे छोटी, लाडली बहन हूँ पर इस बार बड़े भैया को क्या हो गया कैसे अमन का अपमान कर दिया। ये भी नहीं सोचा कि मूझे दूख होगा।

भाभी का भी परायापन सा व्यवहार था। रुकने का मन नहीं कर रहा था। खून के रिश्ते में भी कितना बदलाव आ गया। ".

"नमिता अरे जल्दी करो मूझे देर हो रही है " अमन ने आवाज लगायी। आँखों के आंसू छिपाते हूए नमिता " ये लीजिए। "

अमन तैयार होकर किसी मीटिंग के लिए जा चूका था।

नमिता सोच रही थी कि किस रिश्ते को खास कहूं " खून का रिश्ता जो जान से प्यारा है या वो जो सात फेरे के बाद बना है । "

ईर्ष्या

बहुत अच्छे खानदान और बहुत संस्कारी है छोटी बहू , ये पूरे परिवार को मालूम था । ससुराल संयुक्त परिवार था । उसके चार जेठ थे । घर में सब बहू से प्रेम भी करते थे । बस बीच वाली जेठानी को ये बर्दाश्त नहीं होता था । उसे अपने में कमी महसूस होती थी | वो मन ही मन उसके सामने हीन भावना से ग्रसित रहती थी । जबकि छोटी बहू में अहंकार नहीं था । वो सभी का मान रखती थी ।

मगर बीच वाली जेठानी अंदर ही अंदर उससे ईर्ष्या रखती थी और सभी को उसके खिलाफ भड़काती रहती थी । पर जब उसके भड़काने का लोगों पर बहुत अधिक असर होते हुए नहीं दिखाई दिया तो उसे नई खुराफात सूझी ।

एक दिन किसी बात पर बब्लू (सबसे बड़े जेठ का बेटा 14-15 साल का) छोटी बहू से ---" आप नहीं समझेंगी चाची जी आप तो बड़े घर की हैं , हमारे परिवार में नहीं घुल-मिल सकती हैं । " छोटी बहू उसे देखती रह गई और बीच वाली जेठानी ने जैसे फतह पा लिया हो ,एक कुटिल मुस्कान छोड़ती हुई मन ही मन ---" बच्चों को भड़काना अधिक आसान है । "

हुनर

"हैलो बहू कैसी हो ?"--सावित्री देवी ने कहा

"प्रणाम माँजी"--मालती जवाब दिया

"क्या बात है बहू तुम्हारी आवाज़ क्यों ऐसी है ?"-सावित्री देवी ने पूछा ।

"वो क्या कहूं आपको माँजी चिंटू को एक विषय का ट्यूशन करना है और विवेक कह रहे हैं कि इतना ट्यूशन फीस देने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं। उसके भविष्य का सवाल है इसीलिए मन दुखी हो रहा है । विवेक को तो आप जानती ही हैं । अपनी परेशानी आपसे भी नहीं कहते और चिंटू को भी हिदायत दे रखी है कि आप लोगों से पैसा वगैरह नहीं मांगे ।"

"अरे तुम तो मुझे बताती।--चलो कोई बात नहीं मैं तुम्हारे ससुर जी से बात करती हूँ।"

सावित्री देवी अपने पति से --"सुनिये जी चिंटू को ट्यूशन करना है। आप उसके फीस के पैसे दे देते तो अच्छा होता।"

"क्यों विवेक ने कहा ?"

"नहीं जी विवेक कब कहता है ? वो तो बहु को दुखी देखकर मैंने ही पूछ लिया।"

"देखो सावित्री, बैंक में कुछ पैसे हैं वो मैं रामेश्वरम जाने के लिए रखा हूँ।"

"अजी बच्चे परेशान रहे तो हमें तीर्थ करने में भी कैसे अच्छा लगेगा?"-सावित्री देवी ने कहा

"चलो ठीक है कल भेज दूंगा बहू को बता देना।"

सावित्री देवी ने मालती को फोन करके बता दिया ।

मालती ने अपने बेटे चिंटू से सावित्री देवी से फोन पर हुई सारी बातें बताई।

चिंटू--"जवाब नहीं मॉम आपके हुनर का । अब इतने में बाईक तो आ ही जाएगी।"

रेगिस्तान

"सबके गहने और सड़ियाँ फिकी पर जाती है किटी में रोमा के सामने "---रितु ने कहा । सभी ने एक साथ हामी भरी ।

आखिर होता भी क्यों नहीं उसके गहने और साड़िया होती भी लाजवाब थी ।

रितु --- " रोमा तुम्हारे पति देव तुमसे सचमुच बहुत प्यार करते हैं जो ईतनी महंगी महंगी साड़ियाँ और गहने दिलाते रहते हैं । कुछ तो हमें भी सिखा दो जिससे हमारे पति भी हमें ऐसे ही प्यार करे । "

" छोड़ो भी मेरा मजाक मत बनाओ "---कहते हुए रोमा खिलखिलाकर हँस दी ।

सभी तम्बोला में व्यस्त हो गए और रोमा अपने अतीत में खो गई ।

पहली रात ही रवि कह दिया था --" देखो मैं किसी और के साथ प्रेम करता हूँ । तुम्हें प्यार के सिवा सबकुछ दुंगा , तुम्हें मंजूर है तो ठीक नहीं तो तुम स्वतंत्र हो अपना निर्णय लेने के लिए। "..... रोमा सुन्न हो गई थी । मगर कहती कैसे अपने गरीब माता पिता को । बड़ी मुश्किल से इतना अच्छा रिश्ता जो मिला था उनकी बेटी के लिए । ऐसी बातें सुनकर वे सदमा कैसे झेलेंगे ? यही सोचकर रोमा चुप्पी साध ली और 11 साल से गृहस्थी की साउस रेगिस्तान में बस अकेले चलती आ रही है । पर रवि भी वचन का पक्का निकला । प्रेम के सिवा सबकुछ दिया यहाँ तक कि हमें माँ बनने का सुख भी । तभी रवि का फोन आया -- " रोमा आज मैं रात को घर नहीं आ पाऊंगा ।

शालिनी के घर रुकूंगा , बच्चों को अपने तरीके से समझा देना । "

रोमा का एक सीधा सपाट जवाब --" जी " और तम्बोला में व्यस्त सभी सहेलियों की फीकी साड़ी से निकलती प्रेम की आभा को अपलक देखने लगी |

गंदी बात

"रुचि बेटू जल्दी करो चाचू बाहर इंतजार कर रहे हैं । स्कूल में देरी हो जाएगी।" सविता ने कहा ।

छः साल की रुचि अनमनी सी इधर-उधर देख रही थी ।

रुचि--"पापा आपके साथ मैं स्कूल जाऊंगी । आप मुझे छोड़ आओ न स्कूल।"

"चाचा जी का आफिस उधर ही है, तुम्हें भी छोड़ देंगे।" रवि ने कहा सविता ने देखा कि रुचि की नजर चाचा पर पड़ते ही डर सी गई और अपनी उंगली मुँह पर रख ली ।

"पापा प्लीज" रुचि ने कहा ।

"आप चले जाइए देवर जी, इसे इसके पापा छोड़ आएंगे।"--सविता ने कहा

चाचा चले गए ।

फिर प्यार से रुचि को गोद में लेकर --'क्या हुआ बेटू तुम क्यों डर रही हो ।"

रुचि ने मुँह पर उंगली रखकर --"नहीं"

सविता--"बताओ बेटा"

रुचि --"वो चाचू ने गंदे तरीके से छूआ और कह रहे थे किसी को बताना नहीं। बताना गंदी बात होती है।"

मनमीत

"रमा आज चाय में इतनी देर क्यों लगाई ? मैं कब से इंतजार कर रहा हूँ ।"- सुबोध बाबू ने बिस्तर पर से ही आवाज लगाई ।
"अभी लाई ।"--कहते हुए रमा पहुंची और "आज आप बालकनी में नहीं बैठे ?"
"नहीं ।"
"क्यों ?" रमा चाय पकड़ाते हुए ।
"बस यूँ ही । पर तुम चाय लाने में क्यों देरी कर दी ? तबीयत खराब है क्या ? या किसी बात की तकलीफ है ?"
"नहीं तो ।"
"कोई बात तो है, पर तुम मुझे क्यों बताओगी ।
आखिर मैं कौन होता हूँ ? मैं समझ गया हूँ कि तुम किसको बताती हो । कल मैं मिल चुका उससे । क्यों रमा मैं इतना पराया ..... ?" नाराज और दुखी होते हुए बोले सुबोध बाबू ।
"हाँ अब ये भी मुझपर..... ! देखिए जी सुबह-सुबह इस तरह दीमाग मत खराब कीजिए ।"
"और कल से मेरा है उसका क्या ?"
"क्या हुआ ? क्या किया मैंने ? आपको तो मुझमें बस.....।"
"मुझे अफसोस है कि मैं तुम्हारा हमसफर तो हूँ किन्तु अपनी व्यस्तता और क्रोधी स्वभाव की वजह से इतने सालों बाद भी तुम्हारा मीत नहीं बन पाया । जिसके कारण तुमने किसी को अपना मनमीत बना लिया है और मुझसे तो कुछ कहती नहीं पर ..... । काश ..... ।" सुबोध बाबू अपराध बोध सी आवाज में
"ये लो तुम्हारा मनमीत तुम्हारी डायरी ।"
रमा के आंसू उस डायरी पर भोर की किरण की तरह चमक रहा था ।

आवाज

पवन कोचिंग से रूम में आकर मोबाइल देखा तो पापा का 14 मिस काल। वो समझ गया कि कोचिंग से मेरे टेस्ट के रिजल्ट का मैसेज पापा को मिल गया होगा और वो इसीलिए फोन मिला रहे होंगे । पवन खुद ही पाँच - छः दिन से अपने टेस्ट को लेकर ही परेशान है । पवन मन ही मन --" आखिर मैं क्या करूँ मैं इतनी तैयारी के साथ टेस्ट देता हूँ फिर भी बैच ऊपर नहीं आता वही तीसरे चौथे बैच में रहता हूँ । एक साल हो गए । अब फिर फी जमा कराना होगा । फिर से लोन लेना होगा पापा को । उनलोगों ने मुझसे बहूत उम्मीदें लगा रखी है और मेरा क्या होगा मुझे खुद मालूम नहीं । "
उसी समय फिर फोन आ गया ----" हैलो , पवन ये क्या हो रहा है ? इस बार तो तुम्हारी रैंक और पीछे चली गई । तुम किसी गलत संगति में तो नहीं पर गए हो ? तुम्हें मैं अकेला कमरा इसीलिए दिला रखा है, जिससे तुम्हें पढ़ने में कोई परेशानी नहीं हो । फिर भी . " एक सांस में बोलते जा रहे थे पवन के पापा ---" हाँ तो इस तरह चुप क्यों हो गए । अच्छा चलो ये बताओ कि फी जमा करने की अंतिम तारीख क्या है ? मकान मालिक से कोई परेशानी तो नहीं है ? "
पवन --" नहीं कोई परेशानी नहीं है । फी जमा करने की अंतिम तारीख मैं कल पता करके बता दुंगा । "

" अच्छा लो मम्मी से बात करो "

" हैलो पवन फोन जल्दी उठा लिया कर बेटा चिंता हो जाती है । "--पवन की माँ बोली ।

पवन --" जी ठीक है । अच्छा मैं अभी फोन रखता हूँ । ".....कहकर पवन फोन रख दिया ।

पवन सोचने लगा --" अब फी नहीं जमा करूँगा , मगर पापा को क्या कहूं ? मैं उनकी उम्मीद को पूरा नहीं कर पाऊंगा ऐसा लगता है । फिर मैं ..... कम से कम मझ पर पैसे तो नहीं खर्च होंगे "

इसी कश्मकश में पवन बैठा रहा खाना खाने भी नहीं गया ।
पंखा देखा और उसमें फंदा लगाकर नीचे स्टूल रख दिया और स्टूल पर चढ़कर फंदा गले में डाल ही रहा था कि --मकान मालकिन आंटी की आवाज सुनाई दी वो अपने बेटे से कह रही थी -- "बेटा गोलू खाना खा लो फिर कहीं जाना "।
पवन के आँखों के सामने अपनी माँ की तस्वीर आ गई और
सोचा --" मेरे जाने के बाद मम्मी क्या करेगी ? "

आँखें भर आयी और गले से फंदा निकालकर --" नहीं !!! "--
कहकर स्टूल से नीचे उतर गया।

कथा का प्रभाव

"अरे ओ भाग्यवान, अभी छोड़ो ये लिखना-विखना । आराम से टी. वी. देखो। इसे लिखने से क्या मिलता है ? इसमें केवल काल्पनिक बातें होती हैं । टी. वी. देखो ज्ञान की बातें, कई खबरें या फिर मनोरंजन चैनल ही देखा करो । तुम्हारे लिखने से कुछ भी परिवर्तन नहीं होगा । "--- मिस्टर डी कहते जा रहे थे

मिसेज डी (मुस्कुरा कर) ---" अजी मैं टी वी भी देखती हूँ । रचना के माध्यम से विशेष बातों पर प्रकाश डालना हमारा धर्म है । साथ ही साथ मुझे इससे आत्मिक सुख मिलता है । "....

तभी मिसेज डी के मोबाइल पर काल आ रहा था ।

मिसेज डी --- " हैलो ! "

" हैलो ! नमस्कार , मैं सुधा बोल रही हूँ । आपको धन्यवाद करना चाह रही थी। इसलिए आपकी सहेली से आपका मोबाइल नंबर ली हूँ | "

"किस बात के लिए धन्यवाद ? "----मिसेज डी ने पूछा ।

सुधा ----" कुछ दिन पहले आपकी लघु कथा अखबार में छपी थी । 'रेगिस्तान ' मेरे जीवन से मिलती जुलती है । वो कथा मेरे पति ने भी पढ़ी थी। उसके बाद से उनके व्यवहार में परिवर्तन हो गया है । वो अब छुट्टी के दिन भी हमारे और बच्चों के साथ ही बिताते हैं । मैं और बच्चे उनके इस व्यवहार से बहत खुश हैं| आप इसी तरह अच्छी-अच्छी कथाएँ लिखती रहें । मेरी शुभकामनाएं हैं । "

मिसेज डी ---" धन्यवाद सुधा जी "

मिस्टर डी (पत्नी से) ----" भई किससे बातें हो रही थी ? "

" सुधा नाम की महिला थी कोई । मेरी लघु कथा ' रेगिस्तान 'उसके जीवन से मिलती है । सुधा के पति ने जब से अखबार में वो कथा पढ़ी है तब से अपनी पत्नी की तरफ झुकाव हो गया है। इसी से खुश होकर मुझे धन्यवाद दे रही थी।

अच्छा जी तो बताईये कि क्या लघुकथा लिखना सार्थकता नहीं है ? इससे कोई परिवर्तन नहीं होने वाला है ? क्या कहेंगे आप ? "---एक पैनी नजर से देखते हुए मिसेज डी ने कई सवाल छोड़ दिया ।

मजाक

रोमा बच्चों के कमरे के पास निकल रही थी कि अंदर मिनी की बातें सुनकर एकदम से ठिठक गई और परदे का आड़ लेकर खड़ी होकर सुनने लगी ।

मिनी --" रूही (मिनी की सहेली) तुम्हारी मम्मी तुमसे बहुत प्यार करती है न ? "

रूही ---" हाँ !!! पर आंटी भी तो तुमसे बहुत प्यार करती है । "..... मिनी ---" नहीं, तेरी मम्मी जितनी नहीं करती है । मेरी अपनी मम्मी तो गांव में है न ।"

रूही (आश्चर्य से) --- " क्या !!!! ?"

"हाँ !, मम्मी कहती है कि मेरी अपनी मम्मी गांव में है । "---कहते हुए मिनी उदास थी ।

रूही ---" मिनी तुम अपनी मम्मी से मिली हो ? "

मिनी ---" नहीं "

रूही---" क्यों गांव जाती हो तब मिली नहीं ? "

"नहीं, कभी नहीं देखी । "----बोझिल मन से मिनी बोली ।

रोमा अचंभित थी और मन ही मन सोचने लगी --- " आठ-नौ साल की मिनी हो गई है । इसके मन में ऐसे विचार क्यों घर किये हुए हैं ? मेरी जायी , मुझे ही पराया कह रही है । "

रोमा अपने आप से --" मेरे मजाक में कभी कभी ये कह देना कि , जा मैं तेरी मम्मी नहीं हूँ , तेरी मम्मी तो गांव में है । क्या इसका ये परिणाम भी हो सकता है ? "

बदल गए तुम

"नीतिन तुम ये क्या कर रहे हो ? उलटे-सीधे काम कर रहे हो । कभी बिना मौजे के जूते पहन रहे हो तो कभी आंखों पे चश्मा होने के बावजूद चश्मा ढूढ़ते हो और अब अपना पर्स भूल रहे हो । "नमिता उसे पर्स पकड़ाते हुए बोली ।." ऐसा करो अभी टैक्सी से चले जाओ । खुद ड्राईव करके मत जाओ । "

नीतिन हँसते हुए ---" डोण्ट वरी । मैं ध्यान से चलाऊँगा । वो बचपन का मेरा सबसे खास दोस्त है विनय । उससे 27 साल बाद मिलूंगा इसलिए खुशी की वजह से पुरानी यादों में खो जाता हूँ । अरे ये तो संयोग है कि मेरे क्लाईंट ने हम दोनों को मिलवाया । "

नीतिन घड़ी देखते हुए --" ओहो, अब निकलना चाहिए नहीं तो देर हो जाएगी । पार्टी में समय से पहुंचू । "

नमिता बालकनी में खड़ी मन ही मन सोच रही थी ----." कल जब से नीतिन के बचपन के दोस्त का फोन आया है । कितने खुश हो रहे हैं । बस दोस्त (विनय) और बचपन की बातें ही किये जा रहे हैं । बिल्कुल बच्चे से बन गए हैं "

नीतिन रिशॉर्ट (जहाँ पार्टी थी) पहुंच कर गाड़ी पार्क की और अंदर जाते ही दूर से विनय को पहचान गया । जबकि वो काफी लोगों से घिरा हुआ था ।

तेज कदमों से पास पहुँच कर." कहो विनय कैसे हो ? "

विनय बिना किसी भाव दिखाते हुए -----." पांच मिनट नीतिन "..... दूसरी तरफ मुड़कर कई लोगों के साथ फोटो खिंचाने लगा ।
नीतिन मन ही मन-----." क्या तुम वही विनय हो ? नहीं, बदल गए तुम । "

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- पूनम झा
पिताजी	- डॉ. उग्रनाथ मिश्र
माताजी	- श्रीमती उषा मिश्र
पति	- श्री दिनेश्वर झा
वर्तमान पता	- सी-127, थर्मल कॉलोनी, सकतपुरा, कोटा (राजस्थान) - 324008
वाट्स एप नं.	- 9414875654
शिक्षा	- बी.ए. (ऑनर्स), बी.एड.
जन्म एवं जन्मस्थान	-14 अगस्त 69, मधुबनी, बिहार
ईमेल	- poonamjha14869@gmail.com
साहित्य परिचय	- H for Hindi के संपादक
ब्लाग	- mannkibhasha.blogspot.in - astitwa.blogspot.in
प्रकाशन	- बेवफा हो तुम (ई बुक)।
साँझा संकलन	- 1. अमृत काव्य (काव्य संग्रह), 2. नारी सागर (काव्य संग्रह), 3. कुज्ज निनाद (काव्य संग्रह), भारत के युवा कवि एवं कवयित्रियाँ (काव्य संग्रह), वूमेन आवाज 'नारी से नारी तक', 'दृष्टि' महिला लघुकथाकार अंक (लघुकथाएं), बेटियाँ, साहित्य पीडिया (काव्य संग्रह), परिंदों के दरमियान (लघुकथाएं), साहित्य क्रचा, (काव्य संग्रह), काव्य कलश (ई बुक), अंतरा शब्द शक्ति (ई बुक)
सम्मान	- अमृत काव्य सम्मान, विश्व हिन्दी श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, नारी सागर सम्मान, श्रेष्ठ शब्द शिल्पी सम्मान, साहित्य पीडिया सम्मान, मुक्तक लोक भूषण सम्मान, साहित्य सागर सम्मान एवं फेसबुक समूहोंपर कई सम्मान प्राप्त।
प्रकाशन विवरण	- दैनिक भास्कर, दैनिक नव ज्योति, नव एक्सप्रेस, लोकजंग, अंतरा शब्द शक्ति, ब्रज उपहार, संतुष्टि सेवा, साहित्य लोक, अमृत काव्य, हिंदी साहित्य सागर, नारी काव्य, भारत के युवा कवि एवं कवयित्रियाँ, अमर उजाला, दैनिक वर्तमान अंकुर, पूर्वांचल प्रहरी, साहित्य धरोहर, इत्यादि अखबार, पत्र-पत्रिकाओं में कई वेब पत्रिकाओं में कविताएं मुक्तक, लघु कथाएं इत्यादि प्रकाशित होती रहती हैं।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-35-3

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com